जय माता दी

श्रद्धेय न्यायमूर्ति श्री विनीत सरन जी, सर्वोच्च न्यायालय, भारत

मंचासीन व हाल में उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथिगण।

देवियों और सज्जनों।

आज के विषय के सम्बन्ध में अपने कुछ विचार लिख कर लाया था पर समय के अभाव के कारण लिखित सम्बोधन को त्याग में दो एक छोटी - छोटी बातें कहना चाहूंगा।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय॥...

गीता के प्रथम श्लोक में ही संजय का नाम आता है। धृतराष्ट्र संजय से कुरुक्षेत्र के युद्ध सथल में हो रही गतिविधिओं को जानने की उत्सुक्तता व्यक्त करते हुए वहां का हाल सुनाने को कहते हैं। वह संजय से ऐसा अनुरोध इस लिए करते हैं कि उन्हें मालूम है कि संजय को दिव्य दृष्टि प्राप्त है। हमारे बीच आज के कार्यक्रम के संयोजक संजय ही हैं। उनका भी "विज़न" बहुत अच्छा है इसलिए कांफ्रेंस के आयोजन का कार्य सब उन्ही को सौंप देते हैं और वह बड़ी निष्ठां से उसे निभाते हैं।

आज का विष्य "टैक्स एंड टेक्नोलॉजी" से सम्बंधित है। दोनों ही विष्य बड़े जटिल हैं और मैं ऐसे जटिल विष्यों से दूर ही रहना पसंद करता हूँ। भारत महात्मा गाँधी का देश है जो अपनी सादगी के लिए दुनिया भर में जाने जाते हैं। मैं भी सरलता को मानने वाला व्यक्ति हूँ इसलिए टैक्स जैसे कठिन विष्य को भी सरल रूप में देखना और प्रयोग में लाना सही समझता हूँ।

हमारे शास्त्रों में टैक्स से सम्बंधित दो बड़े महत्वपूर्ण सूत्र हैं। प्रथम सूत्र के अनुसार राजा को टैक्स इस प्रकार से वसूलना चाहिए जैसे मधुमक्खी फूलों से मकरंद एकत्रित करती है, बिना फूल को उसकी जानकारी व कष्ट देते हुए। दूसरा, जैसे सूरज पृथ्वी से धीरे - धीरे जल सौकता है और फिर उसको कईं गुणा कर वर्षा के रूप में वापस पृथ्वी को दे देता है। इन दोनों सूत्रों का तात्पर्य केवल इतना है कि टैक्स का कलेक्शन इस प्रकार से होना चाहिए कि किसीको भी उसकी चुभन महसूस ना हो और उसके द्वारा एकत्रित धन जनता जनार्धन की सेवा में ही लगे।

टैक्स के बारे में बचपन में मेरे पिता के गुरु ने मुझे दस पैसे का अर्थशास्त्र बताया था। इसके अनुसार हर कोई जो दस पैसे कमाता है उसे उसमें से सर्वप्रथम दो पैसे परमार्थ के लिए निकाल देने चाहिए, फिर दो पैसे माता पिता की सेवा के लिए रख देने चाहिए, तब दो पैसे अपनी गृहस्थी में खर्च करने चाहिए, बाकि में से दो पैसे बच्चों की शिक्षा आदि के लिए रखने चाहिए और बचे हुए दो पैसे भविष्य के लिए बचत के रूप में जोड़ने चाहिए।अब इस दस पैसे के अर्थशास्त्र में टैक्स के लिए कोई गुंजाइश नहीं बचती, केवल इतना ही है कि हर मध् में अगर कुछ बिना किसी कष्ट के टैक्स में चला जाए वह अपने आप में सर्वोत्तम टैक्स प्रक्रिया हो सकती है।

आज हम टैक्स के ब्यूरोक्रेटिक सिस्टम से निकल कर कम्पूटराइज़्ड सिस्टम की और बड़ रहे हैं जो अति आवश्यक व सुविधाजनक है परन्तु इस सुविधा को लागू करने के लिए यह परम आवश्यक है कि हम अपनी प्रजा व जनता को इस विषय में शिक्षित करें और इसकी सुविधा सरल रूप में उनको उपलब्ध कराएं। दूसरा व्यापारियों को टैक्स प्रणाली में इतनी छूट अवश्य मिलनी चाहिए कि वह टैक्स रिटर्न हर पन्द्रहवें दिन भरने के वजाय वार्षिक व अर्धवार्षिक भर सकें अन्यथा

उनका सारा समय रिटर्न भरने की तैयारी व रिटर्न भरने में ही लग जाये गा जिससे उनकी व्यापार में अत्यंत हानि होती है। कुछ इसी प्रकार की छोटी - छोटी बातों को संज्ञान में रखते हुए अगर टैक्स प्रणाली व्यापारियों के हित को ध्यान में रखते हुए अपनाई जाए गी तो टैक्स की कलेक्शन स्वतः बड़ जाएगा।

इन्ही शब्दों के साथ मैं इस कॉनफेरेन्स के आयोजन के लिए आप सभी को बधाई देता हूँ।

जय माता दी

(श्री माता वैष्णो देवी स्पिरितुअल ग्रोव्थ सेंटर, कटरा, जम्मू में दिनांक ०२.१०.२०२१ को आयोजित माँ वैष्णो देवी टैक्स कांफ्रेंस में विशिष्ट अतिथि श्री पंकज मित्थल, मुख्य न्यायमूर्ति, जम्मू एंड काश्मीर एंड लद्दाख का उद्बोधन)